## १८६ आरती श्रीप्रभूंची (रागः काफी - तालः दादरा)

चिद्धनैक ज्ञान मंगला ॥ माणिक॥ मनोहराख्य सत्यप्रिय विश्वमंगला।।धु.।। मायाकृत जग मनोहरा ॥ माणिक्॥ माधव तूं मदनमदहरा। (चाल) मुनिमानसहंसमुक्त महामोहमारक तूं। मूर्त महत्भूतमौन मूल मंगला ॥१॥ नारायण निमतपोषणा॥ माणिक।। नारसिंह निगमभूषणा। (चाल) नानाकृत नामरूप नंदभाग्य निजानंद। निखिलनिजनिधानभूत नित्यनिर्मला ॥२॥ हरिहरेशवंद्यहरिहरा ॥ माणिक ॥ हिमनगेशहर्षहिमकरा। (चाल) हाहाजनस्तवित हास्यवदन हेमवर्ण प्रभु। हालाहल हुत भक्षक हरितकलिमला ॥३॥ रासप्रिय रविकुलोत्तमा ॥ माणिक॥ राम रमानाथ उत्तमोत्तमा। (चाल) रुचि अखंड कृत दुखंड सद्वितंड ब्रह्मांड । चित्प्रचंड मार्तांडरूप सोज्वला ॥४॥